## गांधीजी द्वारा लिखित मूल पुस्तक 'सर्वोदय' का नए कलेवर में सपांदन

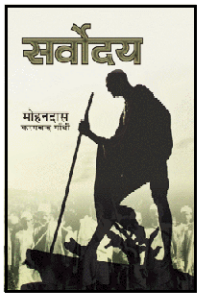


हमारे देश में कई महान् विचारक, समाज-सुधारक एवं लेखक हुए, जिन्होंने न केवल समाज को नई धारा दी बल्कि कुछ ऐसी 'थातियाँ' भी सौंपी जिससे आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरित हों। महात्मा गांधी जैसी महान् आत्मा ने ताउम्र यही प्रयास किया कि समाज में अहिंसा, न्याय, समानता की स्थापना हो, इसी दिशा में उन्होंने 'सर्वोदय' अर्थात् सबका उदय (उन्नति) का विचार दिया। वर्तमान समय में मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के विषय में सोच रहा है, 'पीड़-पराई' न कोई देखना चाहता है, न दूर करना चाहता है। ऐसे समय में 'सर्वोदय' का महान् विचार समसामयिक लगता है। समाज का एक वर्ग कमजोर हो तो दूसरा कैसे उन्नति कर सकता है? 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' हमारी संस्कृति रही है। सर्वोदय एक धारणा है, एक विचार है समाज के सर्वांगीण विकास का।

संपादक मनोज अरोड़ा इन्सां ने गांधीजी के मूल लेखन 'सर्वोदय' को युवा-ऊर्जा के साथ नए क्लेवर में पेश किया है। महान् विचारों को पूर्व की भाँति इन्होंने सरल भाषा में प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है। चार अध्यायों सहित सारांश का यह संग्रह अनमोल एवं पठनीय बन पड़ा है। आज के परिप्रेक्ष्य में जब राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक प्रत्येक स्तर पर गिरावट का दौर जारी है। उसमें 'सर्वोदय' सूर्योदय की भाँति नवीन रोशनी, उन्नति का परिचायक बन सकता है। गांधीजी का जीवन स्वयं इसका साक्षात् उदाहरण था। समाज के हर तबके को उन्होंने आजादी की लड़ाई में अपने साथ लिया क्योंकि स्वतंत्रता एक जीवन-बूटी बन गई थी। आज भी आवश्यकता है हमें सबके विषय में सोचने की। सर्वोत्थान से ही समाज का स्वरूप विकास हो पाएगा।

संपादन **मनोज अरोड़ा इन्सां**, पुस्तक समीक्षा **मीनू** गेरा, मूल्य ₹ 150/- प्रकाशक **साहित्यसागर प्रकाशन** Available on **Amazon.in**

## समाज के मुद्दों पर आधारित पुस्तक 'समकालीन भारतीय समाज में उभरते मुद्दे एवं समस्याएँ'

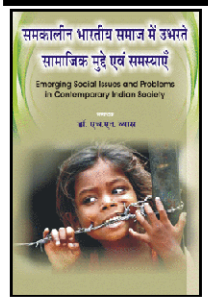


परिवर्तन एक सतत् प्रक्रिया है। सभ्यता के प्रारम्भ से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, परन्तु भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय समाज में चहुँमुखी विकास के साथ-साथ मूलस्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन आए हैं। जिससे भारतीय समाज की परम्परागत संस्थाओं, जीवन मूल्यों, विचारों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा वर्ग व्यवस्था से पारम्परिक स्वरूप तथा परिणाम प्रभावित हुए है। अत: तीव्र गति से आ रहे सामाजिक परिवर्तनों को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा सम्पोषित एवं समाज शास्त्र विभाग, श्री मा.ला.व. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय 'समकालीन भारतीय समाज में उभरते सामाजिक मुद्दे एवं समस्याएं' की न केवल सार्थकता सिद्ध हो जाती है, वरन् प्रस्तुत पुस्तक में संकलित शोध-आलेखों की प्रासंगिकता भी स्वत: बढ़ जाती है। डॉ. हेमेन्द्र नाथ व्यास के इस सार्थक एवं श्लाघ्य प्रयास पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास भी है कि यह पुस्तक तीव्र गति से हो रहे सामाजिक परिवर्तनों को एक सम्पूर्ण एवं सापेक्ष दृष्टि से समझने में शोधार्थियों एवं सुधी पाठकों के लिये सहायक सिद्ध होगी।

संपादक **डॉ. एच.एन.व्यास**, पुस्तक समीक्षा **डॉ. आभा जैन**, मूल्य ₹ 150/- प्रकाशक **साहित्यसागर प्रकाशन** Available on **Amazon.in**

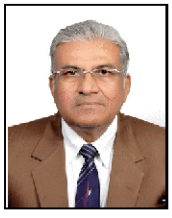

## प्रो. ( डॉ. ) सोहनराज तातेड़ 'जैन सेवा रत्न अलंकरण' से सम्मानित

विद्वान साहित्यकार प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़ पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान को उनके द्वारा दीर्घ अवधि से जैन समाज को दी जा रही सामाजिक सेवा का मूल्यांकन करते हुए 19 मार्च, 2017 को उपस्थित अपार जनमेदनी के बीच स्वतंत्रता सैनानी वीर सांवरकर हॉल, दादर मुंबई में जैन समाज का अतिविशिष्ट सम्मान से अलंकृत किया गया। यह सम्मान ख्याति प्राप्त श्री जैन सेवा संघ, मुंबई रजिस्टर्ड संस्था द्वारा प्रदान किया गया।